Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ का वैश्विक एकता पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

डॉ. राजेश

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा.

ABSTRACT:

आज के विघटनकारी वैश्विक परिवेश में "ग्लोबल साउथ (Global South) की अवधारणा वैश्विक एकता के भिन्न भिन्न स्तरों पर विकासशील देशों को एक जुट करने में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। यह संगठन विकासशील देशों में आर्थिक उन्नयन एवं उनके पुनरुद्धार की दिशा में एक सार्थक प्रयास के रूप में मील का पत्थर साबित हो रहा है। " ग्लोबल साउथ (Global South) संघ के देशों के एकजुट होने पर अनेक देशों से विरोध भी उत्पन्न हुए हैं। कई देश इस संघ की उत्पत्ति के विचार को जड़ से समाप्त करने की मांग कर रहे हैं। उन सभी देशों की चिंता का कारण और कुछ नहीं बल्कि वैश्विक रूप से " ग्लोबल साउथ (Global South) में शामिल देशों के एक जुट होने का डर ही है। अगर नैतिक स्तर पर देखा जाए तो इस संघ के सन्दर्भ में जो भी आलोचनाएं अभी तक सामने आई सभी केवल सतही हैं। यह आलोचनाएँ मुख्य रूप से अक्षांश रेखा के नीचे के देशों के द्वारा इस संघ को नकारात्मक रूप से देखने के कारण उत्पन्न हो रही हैं। अगर आलोचकों का उदाहरण लें तो हम यह जान सकते हैं की भारत इस रेखा के ऊपर है। वैश्विक रूप से आर्थिक समृद्ध ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इसके नीचे हैं। कुछ आलोचक देशों का मानना है कि " ग्लोबल साउथ " संगठन की विचारधारा से जुड़ने वाले देशों में सिर्फ " विकसित हो रहे देशों" या " तीसरी दुनिया" के संभावित देश ही शामिल है। जो दर्द अन्य सीमावर्ती राष्ट्रों को बार बार सता रहा है की कहीं विकासशील राष्ट्रों की शक्ति एक जुट न हो जाये। साथ ही कुछ वैश्विक रूप से बड़े संगठन जिनको अपनी स्वायत्तता पर संकट दिख रहा है वो सभी एकजुट होकर इसका विरोध करना कहते हैं। आज हम " ग्लोबल साउथ (Global South) संघ के निर्माण में आने वाली अनेक प्रकार की सकारात्मक एवं नकारात्मक परिस्थितयों के बारे में इस शोधपत्र के माध्यम से अवलोकन किया गया है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, विकासशील देश, वैश्विक एकता, तीसरी दुनिया, अक्षांश रेखा।

प्रस्तावना

हमें इसे एक आलोचनात्मक शब्द की जगह इसे एक वैश्विक एकता को बढ़ने वाले राजनैतिक प्रासंगिकता और प्रतीकात्मक शक्ति वाले शब्द के रूप में देखना चाहिए। दशकों के वैश्विक प्रयासों के बाद ' ग्लोबल साउथ ' का संगठन को निर्मित करने का विचार निम्न और मध्य-आय वाले भिन्न भिन्न देशों के सरकारों और नागरिकों के साथ और बल पूर्वक स्थापित हो रहा है। " ग्लोबल साउथ" (Global South) शब्द दुनिया की राजनीति में स्थायी पदानुक्रमों के देशों को बाहर किए जाने और उन्हें अस्वीकार करने की भावना का प्रतीक बन चुका है। ऐसे में ग्लोबल साउथ शब्द का उपयोग वैश्विक एकता के लिए और लाभकारी हो गया है। "ग्लोबल साउथ" (Global South) शब्द उन देशों के लिए और खतरनाक हो गया है जो शीत युद्ध के दौरान भिन्न भिन्न देशों के बीच आपसी तालमेल ख़राब करने एवं आर्थिक रूप से लाभकारी पक्ष चुनने के लिए परेशान रहते थे। "'ग्लोबल साउथ" (Global South) शब्द विभिन्न देशों को एक सामान्य एकता के तहत एकजुट करने के लिए जाने जाते हैं। " ग्लोबल साउथ" (Global South) संघ का मुख्या कार्य ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित देशों की आवाज़ विश्व स्तर पर उठाना उनसे जुडी अन्य सुरक्षात्मक एजेंसीयों को मजबूत करना हैं। जिससे उपेक्षित देशों के लिए आर्थिक और राजनीतिक बल को वैश्विक रूप से एकजुट करके विश्व स्तर पर शक्ति संतुलन को बढ़ावा दिया जा सके।

वैश्विक एकता एवं ग्लोबल साउथ:

मनोवैज्ञानिक रूप से हमें चाहिए कि ग्लोबल साउथ शब्द का उपयोग भिन्न भिन्न देशों के एक कठोर समूह के रूप में न करके इसे एक वैश्विक एकता के प्रेरक संगठनात्मक सिद्धांत के रूप में समझना अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आशा की जाती है की यह संगठन वर्तमान समय में उपस्थित अन्य संगठनों से और अधिक न्यायपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और विश्व व्यवस्था की पुनरस्थापित करने में सफल होगा। आज विश्व स्तर पर सभी मुसीबतों की मूल जड़ विश्व स्तर पर बढती गुटबंदी है आज विश्व के प्रायः सभी देश उत्तरी और दक्षिणी दो ध्रुवों में बट गए हैं। देशों को खतरे लोकतंत्रों और निरंकुशताओं से नहीं बल्की शीत युद्ध की इस गुट बंदी से है जिससे ऐसे संगठनों के निर्माण से ही मनोवैज्ञानिक तौर पर निपटा जा सकता है। जिससे विश्व में शीतयुद्ध की राजनीति को कम किया जा सके। हथियारों की होड़ पर लगाम लग सके एवं विकसाशील देशों के हितों को सुरक्षित किया जा सके। आज का समय युद्ध का नहीं बल्कि शांति का होना चाहिए। क्योकि अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो मानव सभ्यता को संकट उत्पन्न हो जाएगा। भयंकर विनाश से कोई भी इस धरती को नहीं बचा पायेगा। मनोवैज्ञानिक तौर पर ग्लोबल साउथ जैसे विचारों से हम विश्व को बचा सकते हैं।

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका:

भारत देश ने विश्वगुरु बनने की दिशा में जो प्रयास अपनाने शुरू किये हैं उनसे भारत की छवि विश्व परिदृश्य पर सकारात्मक होती जा रही है। इसी सन्दर्भ में भारत में 17 अगस्त 2024 को विश्वव्यापी प्रभुत्व वाले संगठन के निर्माण के लिए एक वर्चुअल प्रारूप में तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन की विश्वव्यापी मेजबानी की गई। यह शिखर सम्मलेन वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ के नाम से जाना गया जिसके कारण भारत का नवीन परिस्थितयों में एक नयी छवि का विकास हुआ है I इस शिखर सम्मेलन का मुख्य बिंदु भारत के वैदिक सूत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम, अर्थात "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" के दर्शन पर आधारित था। यह कार्यक्रम भारत के गौरवमई यशश्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के अथक प्रयासों से विकासशील देशों के लिए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के दृष्टिकोण पर आधारित रहा। जिसका उद्देश्य एक नवीन वैश्विक संगठन के निर्माण से विकासशील राष्ट्रों के अंतर्राष्ट्रीय क्षमताओं का विस्तार करना रहा। आपको जानकर हर्ष होगा की इस कार्यक्रम में भारत के मननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में शिखर सम्मेलन में सहभागिता करते हुए, वैश्विक दक्षिण के 123 देशों के 173 गणमान्य व्यक्तियों ने सक्रिय प्रतिभाग करते हुए सकारात्मक सहमती के द्वारा संगठन के निर्माण को बल प्रदान किया। इन सभी देशों का मानना है की इस संगठन के निर्माण से विश्व में एक नई शक्ति का निर्माण होगा और विश्व के के देशों में बढती विघटनकारी नीतियों को कम करने में सहयता मिलेगी। अवश्य ही इस कारण विश्व के आनेक देश एक जुट हो कर वैश्विक एकता का परिचय दे सकेंगे जिससे विश्व शांति के मार्ग में आने वाली चुनौतयों को कम किया जा सकेगा। हमें ऐसे प्रयासों के साथ ही साहित्यों के लेखन में भी राष्ट्र चिंतन को बढ़ावा देना होगा जिससे राष्ट्रीय चेतना का विकास हो सके। नागरिकों में सामाजिक सरोकार की भावना का विकास हो सके एवं युवाओं में शिक्षा एवं रोजगार के साथ ही भारतीयता का विकास भी हो सके।

ग्लोबल साउथ विचार मंच का विश्वव्यापी मनोवैज्ञानिक प्रभाव:

अगर हम देखें तो 'ग्लोबल साउथ' शब्द दशकों से वैश्विक रूप से विवादित शब्द के रूप में

जाना जा रहा है। फिर भी विश्व में मनोवैज्ञानिक रूप से संतुलन बनाये रखने के दृष्टिकोण से पिछले कुछ दशकों में इसकी उपयोगिता निरंतर बढती जा रही है। विश्लेषणात्मक और ऐतिहासिक दोनों स्तर पर इस शब्द की भूमिका विश्व समुदाय में उत्पन्न अनेक तनावों को कम करने एवं युद्धि की सम्भावनाओं को ख़त्म करने के दृष्टिकोण से निरंतर उपयोगी होता जा रहा है। लेकिन बार बार अनायाश इसके साथ एक अन्य विवादित शब्द 'थर्ड वर्ल्ड' से इसके संबंध जुड़ जाने से इसपर कुछ राष्ट्रों की तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। जो इस शब्द के वैश्विक उपयोगिता को सिमित करने का प्रयाश कर रही है। इस बात पर अवश्य विश्वास कर लेना चाहिए कि ग्लोबल साउथ शब्द किसी भी दशा में थर्ड वर्ल्ड से अलग नहीं है। विश्व में बढती एकतरफा अराजकता से विश्व समुदाय के मानव समाज का एक पक्ष भविष्य में गंभीर संकट में आ सकता है। इस लिए विश्व में शक्तियों के संतुलन को देखते हुए ऐसी शक्तियों एवं संगठनों का विकास अत्यंत आवश्यक है। ऐसे संगठनों के विकास से शक्तियों का एक तरफ़ा ध्रुवीकरण रोका जा सकता है जो मनोवैज्ञानिक रूप से विश्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष:

महान राजनीतिकार प्रसाद 2012, कहते हैं कि ''अगर हम 'ग्लोबल साउथ' शब्द के भिन्न भिन्न पहलुओं पर ध्यान दें तो हम पाते हैं कि इसमें एक तरफ, शोषण और अमानवीयकरण की अपनी वैश्विक केशिकाओं को कम करने के साथ नवउदारवाद का नया भूगोल समाहित है तो इसमें दूसरी तरफ वैश्विक रूप से आम संपत्ति की चोरी, मानवीय गरिमा और अधिकारों की चोरी, लोकतांत्रिक संस्थाओं को लाचार एवं कमजोर करने के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का एक वैश्विक समूह है।''

इस प्रकार वैश्विक दक्षिण के नाम से वर्गीकरण में शामिल न केवल वे स्थान हैं जिन्हें पहले तीसरी दुनिया के नाम से बार बार संदर्भित किया जाता रहा है, बल्कि उत्तर में स्थित वे उपेक्षित स्थान भी शामिल किये गए हैं जो वास्तविक रूप से शोषण, उत्पीड़न और नव-औपनिवेशिक संबंधों की समस्या से जूझ रहे हैं। इनमें पश्चिमी समाजों के स्वदेशी मूल के और अश्वेत समुदाय, अप्रवासी समुदाय भी शामिल हैं। इसके विपरीत वे स्थान भी हैं जो कभी तीसरी दुनिया का हिस्सा हुआ करते थे, वही अब धुआधार प्रतिस्पर्धा, आधुनिकीकरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण की तीव्र वैश्विक प्रक्रियाओं के कारण अस्पष्ट राजनीतिक और आर्थिक स्थान नए रूप में स्थानांतरित हो चुके हैं। उदाहरण के लिए हांगकांग, सिंगापुर, ताइवान, दक्षिण कोरिया, सऊदी अरब, यूएई, कतर, कुवैत, ओमान, बहरीन, जो भौगोलिक रूप से 'दक्षिण' में स्थित हैं। ये सब अपनी आर्थिक संरचनाओं और यहां तक कि स्वयं की सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं से वैश्विक दक्षिण का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं। हाल ही में कोविड-19 संकट के कारण विश्व के अनेक देशों के बीच सीमांतता स्पष्ट सामने आ चुकी है। इससे पता लग गया है की किसी भी वैश्विक संकट से कोई देश अछूता नहीं रहेगा। देश की सीमायें भले ही बाट दी जाएँ वैश्विक संकट सभी देशों को प्रभावित करेगा। इसकी बाट अलग है की अमीर देशों पर इसका प्रभाव कम एवं गरीब देशों पर इसका प्रभाव विनाशकारी होगा।

REFERENCES

1. अमीन, एस.: *असमान विकास: परिधीय पूंजीवाद के सामाजिक निर्माण पर एक निबंध*, मासिक समीक्षा प्रेस, 1976, पृ. 315।

2. एंगी, ए.: असमानता, मानवाधिकार और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, *मानवता मानवाधिकार व मानवतावाद और विकास का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, VOL.* 10(3), पृ. 429–442.

3. एनीवास, ए. और निसानियोग्लू, के. : *पश्चिम कैसे शासन करने लगा पूंजीवाद की भूराजनीतिक उत्पत्ति* , पॉलिटी प्रेस, 2015, पृ. 211-15.

4. कॉक्स, आर. डब्लू. : विचारधाराएँ और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था: कुछ हालिया साहित्य पर विचार, *अंतर्राष्ट्रीय संगठन*, 1979. *VOL.* 33(2), पृ.257-92.

5. कैलिनिकोस, ए. : साम्राज्यवाद की वास्तविकता, *मिलेनियम: जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज* , 2002, *VOL.* 31 (2), पृ. 319–326.

6. ग्रैंडिन, जी., वेनेजुएला में क्या दांव पर है? संप्रभुता और लैटिन अमेरिका पर, *लंदन रिव्यू ऑफ बुक्स* , 2019, पृ.164-73.

7. ग्रोवोगुई, एस.: फिर भी एक क्रांति: अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में वैश्विक दक्षिण.' *ग्लोबल साउथ,* 2011, *VOL.* 5(1), पृ.175-90.

8. डेविस, एम.: *लेट विक्टोरियन होलोकॉस्ट्स: एल नीनो अकाल और तीसरी दुनिया का निर्माण*, वर्सो., 2001, पृ. -73-95.

9. डु बोइस, *द वर्ल्ड एंड अफ्रीका*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस., 2007, पृ. 210-25.

10. जेम्स, सी.एल.आर.: *द ब्लैक जैकोबिन्स: टूसेंट लॉओवरचर एंड द सैन डोमिंगो रिवोल्यूशन*, पेंगुइन बुक्स, 2001, पृ.215-25.

11. दादोस, एन., और कॉनेल, आर. 2012. 'द ग्लोबल साउथ.' *संदर्भ VOL.* 11(1), पृ. 12-13.

12. प्रसाद, वी.: *द डार्कर नेशंस: ए पीपल्स हिस्ट्री ऑफ़ द थर्ड वर्ल्ड, गरीब राष्ट्र: वैश्विक दक्षिण का संभावित इतिहास*, 2012, द न्यू प्रेस, वर्सो. पृ.-217-25.

13. फैनन, एफ.: *द व्रेच्ड ऑफ द अर्थ* . ग्रोव प्रेस., 2004, पृ. -355-65.

14. फ्रैंक, ए.जी.: अंडरडेवलपमेंट का विकास.' एम.ए. सेलिगसन और जे.टी. पासे-स्मिथ (संपादक) में. *विकास और अंडरडेवलपमेंट,* लिन राइनर, 2008, पृ.-47-55.

15. लेनिन: *साम्राज्यवाद: पूंजीवाद का उच्चतम चरण*, लेफ्टवर्ल्ड बुक्स प्रेस, VI - 2000, पृ. -17-35.

16. लक्समबर्ग, आर.: *पूंजी का संचय*, मासिक समीक्षा प्रेस, 1951, पृ. -47-65.